डॉ. विजय मिश्र

हार्वर्ड विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित भौतिक विज्ञानी एवं संस्कृत विद्वान। कवि के तौर पर न्यू इंग्लैंड, दक्षिण एशिया के अनेक देशों में चर्चित एवं सफल यात्राएँ कीं। अनेक गरिमापूर्ण कवि सम्मेलनों में भागीदारी। विगत १८ बरसों से हार्वर्ड विश्वविद्यालय में सालाना भारतीय कविता पाठ का आयोजन कर रहे हैं।

सम्पर्क : १८०, बेडफोर्ड रोड, लिंकन, एमए. ईमेल : misra.bijoy@gmail.com

रामायण : एक विमर्श

माता कौशल्या

संसार में माँ का पद सबसे अलग होता है। प्रकृति में जो भी गुण हैं वे सिर्फ माताओं को मालूम होते हैं, दूसरे उसको अनुमान नहीं कर सकते। माँ विश्व को रखती है, पोषती है, उनको जन्म देती है, अपने खून से नींव बनाती है। बच्चे की होनहारी से माँ को खुश होती है, कभी भी बोल देती है कि 'मैं इसकी माँ हूं'। बच्चे की इच्छा को माँ आगे रखती है, उसकी खिलाफत नहीं करती। संसार में माँ का निर्माण अद्‌भुत है।

रामायण की कहानी है उस चरित्र का – जो धीर हो, शान्त हो, वीर हो, सच्चरित्र हो, धार्मिक हो, प्रियवादी हो, जो सब गुणों का आधार हो। ऐसे एक व्यक्ति को कवि वाल्मीकि ने 'राम' नाम से अंकित किया है। रामजी को जन्म लेने के लिये कोई माता चाहिए, ऐसी माता को बनाने के लिये कवि कौशल्या चरित्र का उद्‌भावन करते हैं। कवि ने उनसे तमाम व्रत करवाये, फिर यज्ञ के पायस के प्रभाव से रामजी का जन्म हुआ। "मुझे गुणवान पुत्र की माँ बनने का सौभाग्य हो", यह कौशल्याजी की आकांक्षा बनी रहती है। संसार की सभी माँएँ ऐसी आशा रखती हैं।

कौशल्याजी राजा दशरथ की पहली रानी हैं। कौशल्याजी के माता-पिता, परिवार और परवरिश कहानी में नहीं आते हैं। चरित्र की शुरुआत दशरथ की रानी से ही होती है। दशरथ के औरस से एक कन्या पैदा होती है, उसकी ऋषि ऋष्यशृंग से शादी करवाई जाती है। सिंहासन के लिये राजा दशरथ को एक पुत्र चाहिये, पुत्र जन्म नहीं होता, राजा दूसरी रानी लेते हैं, फिर तीसरी। पुत्र फिर भी नहीं। राजा यज्ञ करते हैं। कौशल्याजी सबसे ज्यादा तपोवती रहती हैं, कौशल्या की श्रद्धा और व्रत से राजा बहुत खुश रहते हैं। यज्ञ से जो पायस निकलता है, उससे आधा वह कौशल्याजी को ही देते हैं। उस पायस के प्रताप से रामजी का जन्म होता है।

यद्यपि बल से राजा दशरथ को शिकार, घोड़े आदि में शौक था, कौशल्याजी उनसे दूर रहती थी। व्रत और पूजा के माध्यम से राज्य और राजा की भलाई होती है- यही उनकी भावना थी। बच्चा हो तो धार्मिक हो, राजा हो तो शांत हो। तो भी राजा दशरथ ने कौशल्याजी को पटरानी की पदवी से वंचित नहीं किया। लेकिन ऐसी पटरानी रानी कैकेयी को अच्छी नहीं लगी। रानी कैकेयी के साथ दशरथ पूरे में राज्य घूमते थे, शिकार करते थे और रात बिताते थे। कैकेयी ने राजा को अपने अधिकार में ही रखा लिया था। कौशल्याजी को फटकारने और डांटने में उनको आनन्द मिलता था। रामजी को तो वह प्यार करती थी, लेकिन जब मंथरा कौशल्या के राजमाता बनने का संदेश लायी तो उन्हें चक्कर आ गया, उन्होंने रामायण का नाटक शुरू कर दिया।

रामजी की चरित्रवत्ता, उनकी शिक्षा, उनके धार्मिक आचरण में स्वयं माता कौशल्या की प्रचेष्टा भरी हुयी है। दैनिक पूजा करके देवताओं के आशीर्वाद लेकर उन्होंने रामजी को पाला और गुणवान किया। ऐसे में जब राम वन जाने का आदेश लाते हैं, तो कौशल्याजी घबरा जाती हैं। यह समझो कि माँ के मन में आकांक्षा रहती है – मेरा पुत्र बड़ा होगा, राजा होगा और मुझे सुख मिलेगा। जब राम अपने पितृवचन न तोड़ने के लिये अटल रहते हैं, तब कौशल्या में क्रोध और धिक्कार की आंधी चलती है।

जब राजा दशरथ रामजी को युवराज पद पर अधिष्ठित कराने का निर्णय लेते हैं, माता कौशल्या सबसे ज्यादा खुश होती हैं। वह रास्ते पर सबको दान देने चलती हैं, रात भर

पूजा करती हैं, अपनी मनोकामना पूर्ति के लिये अपने को धन्य समझती हैं। जब रामजी उन्हें सुबह पिताज्ञा सुनाते हैं, तो वह रामजी की बातों को क्रोध के साथ ठुकराती है- "पिता है कौन, तुम्हें किसने पाला, किसने बड़ा किया, वह पिता था कहां, तू क्या पुत्र है जो अपनी मां को छोड़कर पिता की आज्ञा सुनता है, तेरा धर्म बेकार है।" पास में बैठे हुए लक्ष्मण यह सुनकर राजा दशरथ को कैद करने की सलाह देते हैं और कौशल्या उनको मना नहीं करती। पुत्र की अगर चिन्ता हो तो माता पिता की कुछ भी नहीं सुनती।

कौशल्याजी को इस बात का डर है कि रामजी के वन में चले जाने पर वे उस प्रासाद में अकेली हो जायेंगी, उनका अपना कोई नहीं होगा। अपने स्वामी के ऊपर उनका कोई विश्वास नहीं है। कैकेयी की कड़वी, खारी बातों से राजा ने उनको कभी नहीं बचाया। राजा अपनी मर्जी चलाता है, अपना सुख देखता है। संसार की सारी माताओं का यह क्रन्दन है, सभी स्त्रियाँ अपने स्वामी की दासी की तरह सेवा करती हैं। यह रीति विचित्र है। किसी भी तरह रामजी कौशल्याजी को अपने साथ कहीं भी ले जायें इसके लिये वे विनती करती हैं। "मुझे गाय समझो, तू मेरी वत्सा हो, तेरे बिना मैं जी नहीं सकती।"

मातृ आशीर्वाद : कौशल्याजी को समझ में शायद यह आता है कि रामजी की धार्मिक अटलता में उन्हीं की शिक्षा है। पिता को संसार में सबसे पवित्र समझना उन्होंने ही सिखाया है। वह मान लेती है कि रामजी की प्रतिज्ञा अतुल है और वह वन जाने के लिये मन स्थिर कर चुके हैं। इसको समझकर अब वह आशीर्वादभरी माँ बन जाती है। जिन देवताओं की पूजा उन्होंने जिन्दगी भर की है, उन सबको रामजी का खयाल रखने की वह विनती करती है। "उस वन में मैं अपने राम को नहीं देख पाऊंगी, आप मेरे तरफ से उनका ध्यान रखना। हे वायु, हे आकाश, हे सूर्य, हे पहाड़, हे नदियां- मेरा राम वन को जा रहा है, उसका आप ख्याल रखना। उसको मेरे पास वापस लौटा लाने की चिंता करनी है।"

विश्व को चलाने वाली सभी शक्तियों को अपने पुत्र राम के लिये भक्ति और दम भरी पुकार देकर माता कौशल्या ने संसार की समस्त माताओं की भावनाओं को भाषा दी है। कवि वाल्मीकि जानते हैं कि माँ ही बच्चे का रक्षाकवच है, संसार की सारी शक्तियां माँ ने पहन रखी हैं। वह चाहती है कि वे सारी शक्तियाँ अपने बच्चे की मदद के लिये आगे आये, क्योंकि बच्चा अब माँ की निगाह में नहीं है। सभी बच्चों के लिये यह है माँ का निवेदन – "आपने मुझे शक्ति दी ताकि मैं बच्चों को संसार में लायी, उसको स्वस्थ रखने का प्रबंध आपके ऊपर ही है। मैं वहीं माँ हूं, जिसको आपने आशीर्वाद करके माँ बनने का सौभाग्य दिया था, उसी सौभाग्य से मेरे बच्चों को मेरे पास लाने का प्रबंध करें।"

विश्व को चलाने वाली सभी शक्तियों को अपने पुत्र राम के लिये भक्ति और दम भरी पुकार देकर माता कौशल्या ने संसार की समस्त माताओं की भावनाओं को भाषा दी है।

राजा दशरथ को भर्त्सना और राजा की मृत्यु : राम, सीता और लक्ष्मण के रथ को विदा देकर राजा दशरथ कौशल्याजी के साथ ही रहते हैं। वह जानते हैं कि अगर उनका कोई सच्चा साथी है तो कौशल्याजी ही है। कौशल्याजी के मन के दर्द को वह समझते हैं, लेकिन राजा लाचार हो जाते हैं। इस समय तक कौशल्याजी को मालूम हो जाता है कि कैकेयी के षड़यंत्र से रामजी वन भेजे गये हैं – कौशल्याजी के मन में क्षोभ आता और राजा के ऊपर से उनका सारा विश्वास खत्म हो जाता है। जब सुमन्त्र राम सीता और लक्ष्मण को वन में छोड़कर अकेला वापिस आता है, तो कौशल्या जी रोने लगती हैं- वह राजा दशरथ को धिक्कारती हैं। स्त्री का अपने स्वामी को बोलना संसार में होता है, लेकिन यह बोलना कुछ दूसरे तरीके का था। कौशल्याजी अपने आपको समझा नहीं पाती, व्याकुलता से वे खो जाती हैं। राजा को वे अनाप-शनाप बोल देती हैं। राजा जब उनको पति मर्यादा का सुझाव देते बोध करवाते हैं, तब कौशल्याजी अपने धार्मिक भाव से क्षमा मांगती है। वह जानती हैं कि उनका आचरण अपने पुत्र के ऊपर असर कर सकता है। सारी माँएँ अपने बच्चों के लिये चुप-चुप रोती हैं।

इस समय रामजी के वनवास के बारे में राजा शाप की बात कौशल्याजी को सुनाते हैं। कहानी सुनने को वह तैयार नहीं, सो जाती हैं। उसके साथ सुमित्रा भी सो जाती है, रानी कैकेयी भी कहीं वहीं सोयी हुई है। ऐसी ही रात में राजा दशरथ की मौत होती है। पुत्र वन में और स्वामी का स्वर्गवास; यह रही कौशल्या माता की कहानी।

राजमाता कौशल्या : राजा दशरथ की मृत्यु के पश्चात् रघुकुल की जिम्मेदारी रानी कौशल्या सम्भालती हैं। भरत राजा बनने से इनकार करते हैं और रामजी की खोज में सारी फौज को रवाना करते हैं। कौशल्याजी उनके साथ होती हैं। कौशल्याजी के साथ सभी रानियां भी चलती हैं। भरत की भावना है राजपद रामजी का ही है। उनको ही राजा बना के घर लाना होगा। रास्ते पर भरत को शोक आता है। अपने आदरणीय भाई, जो रघुकुल भूषण हैं, वह जंगल में किसी झोपड़ी में ठहरे हुए हैं। अपने को वह दोषी ठहराकर पश्चाताप करते हैं और बेहोश हो जाते हैं। इस समय माता कौशल्या उनको अपनी गोद में लेकर ताकत देती हैं, आगे देखने को प्रेरित करती हैं और सहारा देती हैं। रानी कौशल्या से माँ कौशल्या बनकर वह राजमाता बन जाती हैं।

कौशल्या वाल्मीकि का आदरणीय चरित्र है। वे धरती पर माँ के अनुभव, कार्य और आकांक्षा को कौशल्या के माध्यम से चित्रण करते हैं। माता को पुत्र की ओर देखने का आग्रह रहता है, लेकिन पति के पास रहना स्त्री का धर्म होता है। इसमें आती है माँ की मिन्नत - "मेरे राम को दास बनाकर रखो, वन में मत भेजो।" ■